इस मास में विशेषः साधना दीक्षा

अनन्त विष्णु शक्ति साधना

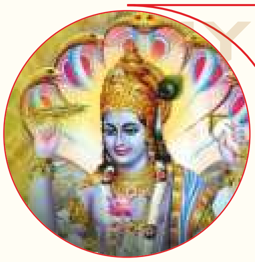

आमलकी एकादशी - 27 फरवरी

पुरूषोत्तम लक्ष्मी तत्व से ही सांसारिक जीवन के अधिकांश कार्य गतिशील होते हैं। व्यक्ति में जहां एक ओर पुरूषोत्तम की असीम आत्मिक ऊर्जा, साहस, संयम, धैर्य होना चाहिये, वहीं उसके जीवन में लक्ष्मी तत्व के रूप में मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, नीति, धर्म, यश, सौभाग्य, अर्थ, आरोग्यता आदि का भी समावेश होना ही चाहिये। यह साधना जीवन की सभी न्यूनताओं, रोग, शत्रु बाधा आदि नकारात्मक ऊर्जा को भस्मीभूत कर जीवन में सकारात्मक ऊर्जा के समावेश से निरन्तर सद्कर्म करते हुये धन, यश, वैभव, पद, प्रतिष्ठा, सम्मान, दीर्घायु जीवन, संतान सुख आदि-आदि कामनाएं पूर्ण कर पाता है।

अघोरेश्वर अवधूत तंत्र साधना

तंत्र सिद्धि दिवस-01 मार्च

धन, यश, मान, पद, प्रतिष्ठा तो किसी अन्य साधना से भी प्राप्त हो सकती है, परन्तु यह सब प्राप्त हो, और साथ ही प्राप्त हो एक आन्तरिक आनन्द, एक आन्तरिक मस्ती, एक आन्तरिक खुमारी, हृदय के अन्दर लहराता हुआ शान्ति का समुद्र ऐसा तो केवल अघोर तंत्र साधना के माध्यम से ही सम्भव है। एक तरफ जहां साधक के भौतिक जीवन में किसी प्रकार की कोई अड़चन, कोई न्यूनता नहीं रहती, सभी प्रकार के भौतिक सुख उसे प्राप्त होते हैं, वहीं वह आनन्द का सभी रसास्वादन करता है, जो कि एक आध्यात्मिक उपलब्धि है।

कामेश्वरी ललिता साधना

रंग पंचमी-08 मार्च

यह साधना इतनी तीक्ष्ण और तुरंत प्रभाव डालने वाली है, कि यदि साध्य व्यक्ति की रक्षा स्वयं ब्रह्मा भी करें, तो भी वह मोहित होता ही है। इस साधना की विशेषता यह है, कि जहां इससे अन्य जन मोहित होते हैं, वहीं व्यक्ति स्वयं भी अत्यधिक सुन्दर एवं आकर्षक हो जाता है। वह देखने में कितना ही कुरूप क्यों न हो, इस साधना के बाद एक अनोखी वशीकरण शक्ति विकसित होती ही है, उसके अन्दर इतना आकर्षण उतर जाता है, कि लोग देखते ही उसकी ओर स्वतः ही खिंचते चले आते हैं।

चर्म रोग व रक्त रोग निवारण प्रयोग

शीतला अष्टमी-11 मार्च

यदि किसी भी प्रकार का चर्म रोग हो, त्वचा पर सफेद या लाल दाग बनने लग गये हों, चमड़ी पर चकत्ती होने लग गई हो या त्वचा बदरंग होने लग गई हो अथवा शरीर पर दाद, खाज, खुजली आदि हो या शरीर में रक्त की न्यूनता हो तो यह प्रयोग तुरन्त सिद्धिदायक है और इससे निश्चित रूप से पूर्ण चर्म रोग मिट जाता है।

साधना एक साधक के जीवन का अभिन्न अंग है, जो साधक समय-समय पर स्वयं व सामूहिक रूप से साधना सम्पन्न करते हैं, वे सदैव सद्गुरूदेव के हृदय में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त करते हैं। ये विशिष्ट साधनायें सम्पन्न करने के लिए कैलाश सिद्धाश्रम में सम्पर्क करें।